प्रशिक्षण सह–कार्यशाला

साइलेजः पूर्वी उत्तर प्रदेश के किसानों के लिए एक अवसर

(संरक्षित पशु आहार–समृद्धि का आधार)

भा.वा.अ.शि.प.–पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज द्वारा संचालित अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना–फॉडर के अन्तर्गत एक दिवसीय प्रशिक्षण सह–कार्यशाला का आयोजन दिनांक 19.03.2025 को किया गया। कार्यशाला का शुभारम्भ मुख्य अतिथि डॉ. देवेन्द्र स्वरूप, सेवानिवृत्त वरिष्ठ वैज्ञानिक, कृषि विज्ञान केन्द्र, मैनपुरी द्वारा किया गया। उन्होने उपस्थित किसानों को साइलेज विधि से अवगत कराते हुए इसके माध्यम से हरे चारे के संरक्षण पर विस्तृत व्याख्यान प्रस्तुत किया साथ ही इस चारा को खिलाने से होने वाले लाभ से भी अवगत कराया। इसी क्रम में उन्होने पशुधन विकास हेतु सरकारी ऋण योजना पर भी चर्चा किया। कार्यशाला समन्वयक एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर ने कार्यशाला के मुख्य उद्देश्य पर चर्चा करते हुए साइलेज विधि द्वारा हरे चारे के संरक्षण से अवगत कराया। उन्होने बताया कि पशुओं के लिए सूखे के मौसम में जब खेतों व प्राकृतिक चारागाहों में हरा चारा उपलब्ध नहीं होता है तो उस स्थिति में यह साइलेज महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसी क्रम में केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक आलोक यादव ने बताया कि साइलेज के अन्तर्गत हरे चारे में पाए जाने वाले सभी पौष्टिक तत्व पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध रहते हैं, जो कि गाय, भैंस, बकरी तथा अन्य पशुओं हेतु अत्यन्त उपयोगी साबित होते हैं। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनुभा श्रीवास्तव द्वारा साइलेज की सुरक्षा और भण्डारण के अन्तर्गत साफ–सफाई, स्वच्छ चारा, उचित भण्डारण स्थल तथा खराब हिस्सों को हटाना आदि सम्बन्धित विषयों से अवगत कराया गया। कार्यशाला में उपस्थित बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. आलोक कुमार सिंह ने बताया कि साइलेज में आमतौर पर हरे घास, मक्का, सोरघम तथा अन्य फसलों से बनाया जा सकता है साथ ही बिपिन कुमार सिंह ने साइलेज पर प्रकाश डालते हुए बताया कि इसमें सूखे चारे कि अपेक्षा प्रोटीन, कैल्शियम, फास्फोरस, पोटैशियम व फाइबर आदि जैसे पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में उपलब्ध रहते हैं। केन्द्र के तकनीकी अधिकारी रतन गुप्ता के कुशल नेतृत्व में परियोजना कर्मियों यथा सत्यव्रत सिंह एवं स्वाति प्रिया द्वारा उपस्थित किसानों के समक्ष वृक्ष की पत्तियों आदि से हरा चारा तैयार करना तथा उनके भण्डारण हेतु विभिन्न तरीकों का प्रदर्शन किया गया। आयोजित प्रशिक्षण सह–कार्यशाला में 100 से अधिक किसानों ने प्रतिभागिता करते हुए हरे चारे के अधिक से अधिक उत्पादन तथा इसके उपयोग पर विस्तृत जानकारी प्राप्त किया। उक्त आयोजित कार्यशाला अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना–फॉडर द्वारा वित्तपोषित है।

अनुभा श्रीवास्तव
अनीता तोमर
देवेन्द्र स्वरुप
बिपिन कुमार सिंह

संरक्षित पशु आहार - समृद्धि का आधार
प्रशिक्षण सह कार्यशाला
अनुभा श्रीवास्तव
अनीता तोमर
देवेन्द्र स्वरुप
बिपिन कुमार सिंह

संरक्षित पशु आहार - समृद्धि का आधार
प्रशिक्षण सह कार्यशाला
अनुभा श्रीवास्तव
अनीता तोमर
देवेन्द्र स्वरुप

19 March 2025

संरक्षित पशु आहार - समृद्धि का आधार
प्रशिक्षण सह कार्यशाला
साइलेज: पूर्वी उत्तर प्रदेश के
किसानों के लिए एक
19 March 2025

साइलेजः पूर्वी उत्तर प्रदेश के
किसानों के लिए एक अवसर
संरक्षित हरा चारा (साइलेज/Silage)
19 March 2025

संरक्षित पशु आहार - समृद्धि का आधार
प्रशिक्षण सह कार्यशाला
19 March 2025

संरक्षित पशु आहार - समृद्धि का आधार
प्रशिक्षण सह कार्यशाला
19 March 2025

19 March 2025

संरक्षित पशु आहार - समृद्धि का आधार
प्रशिक्षण सह कार्यशाला
साइलेजः पूर्वी उत्तर प्रदेश के किसानों के लिए एक अवसर
संरक्षित हरा चारा (साइलेज/Silage)
अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (चारा/फॉडर)
दिनांक - 19 मार्च 2025
आयोजन स्थल
केन्द्रीय अनुसंधान पौधशाला
पडिला, प्रयागराज
भा.वा.अ.शि.प.-पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज
19 March 2025

किसानों के लिए सुअवसर, वृक्षों से प्राप्त होगा हरा चारा : डॉ. देवेंद्र स्वरुप

विद्रोही सामना संवाददाता

प्रयागराज। भा.वा.अ.शि.प.- पारिस्थितिक पुर्नस्थापन केन्द्र, प्रयागराज द्वारा संचालित अखिल भारतीय समन्वित अनुसन्धान परियोजना-फॉडर के अंतर्गत एक दिवसीय प्रशिक्षण सह कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का शुभारम्भ मुख्य अतिथि डॉ. देवेंद्र स्वरुप, सेवानिवृत वरिष्ठ वैज्ञानिक, कृषि विज्ञान केन्द्र, मैनपुरी द्वारा किया गया। उन्होंने उपस्थित किसानों को साइलेज विधि से अवगत कराते हुए इसके माध्यम से हरे चारे के संरक्षण पर विस्तृत व्याख्यान प्रस्तुत किया साथ ही इस चारा को खिलाने से होने वाले लाभ से भी अवगत कराया। इसी क्रम में उन्होंने पशुधन विकास हेतु सरकारी ऋण योजना पर भी चर्चा किया। कार्यशाला समन्वयक एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर ने कार्यशाला के मुख्य उद्देश्य पर चर्चा करते हुए साइलेज विधि द्वारा हरे चारे के संरक्षण से अवगत कराया। उन्होंने बताया कि पशुओं के लिए सूखे के मौसम में जब खेतों व प्राकृतिक चारागाहों में हरा चारा उपलब्ध नही होता है तो उस स्थिति में यह साइलेज महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसी क्रम में केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक आलोक यादव ने बताया कि साइलेज के अंतर्गत हरे चारे में पाए जाने वाले सभी पौष्टिक तत्व पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध रहते हैं, जो कि गाय, भैंस, बकरी तथा अन्य पशुओं हेतु अत्यंत उपयोगी साबित होते हैं। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनुभा श्रीवास्तव द्वारा साइलेज की सुरक्षा और भण्डारण के अंतर्गत साफ-सफाई, स्वच्छ चारा, उचित भण्डारण स्थल तथा ख़राब हिस्सों को हटाना आदि सम्बन्धित विषयों से अवगत कराया गया। कार्यशाला में उपस्थित बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. आलोक कुमार सिंह ने बताया कि साइलेज में आमतौर पर हरे घास, मक्का, सोरघम तथा अन्य फसलों से बनाया जा सकता है साथ ही बिपिन कुमार सिंह ने साइलेज पर प्रकाश डालते हुए बताया कि इसमें सूखे चारे कि अपेक्षा प्रोटीन, कैल्शियम, फास्फोरस, पोटैशियम व फाइबर आदि जैसे पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में उपलब्ध रहते हैं। केन्द्र के तकनीकी अधिकारी रतन गुप्ता के कुशल नेतृत्व में परियोजना कर्मियों यथा सत्यव्रत सिंह एवं स्वाति प्रिया द्वारा उपस्थित किसानों के समक्ष वृक्ष की पत्तियों आदि से हरा चारा तैयार करना तथा उनके भण्डारण हेतु विभिन्न तरीकों का प्रदर्शन किया गया। आयोजित प्रशिक्षण सह कार्यशाला में 100 से अधिक किसानों ने प्रतिभागिता करते हुए हरे चारे के अधिक से अधिक उत्पादन तथा इसके उपयोग पर विस्तृत जानकारी प्राप्त किया।

किसानों के लिए सुअवसर, वृक्षों से प्राप्त होगा हरा चारा : डॉ. देवेंद्र स्वरुप

प्रभात वंदना संवाददाता

प्रयागराज। भा.वा.अ.शि.प.- पारिस्थितिक पुर्नस्थापन केन्द्र, प्रयागराज द्वारा संचालित अखिल भारतीय समन्वित अनुसन्धान परियोजना-फॉडर के अंतर्गत एक दिवसीय प्रशिक्षण सह कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का शुभारम्भ मुख्य अतिथि डॉ. देवेंद्र स्वरुप, सेवानिवृत वरिष्ठ वैज्ञानिक, कृषि विज्ञान केन्द्र, मैनपुरी द्वारा किया गया। उन्होंने उपस्थित किसानों को साइलेज विधि से अवगत कराते हुए इसके माध्यम से हरे चारे के संरक्षण पर विस्तृत व्याख्यान प्रस्तुत किया साथ ही इस चारा को खिलाने से होने वाले लाभ से भी अवगत कराया। इसी क्रम में उन्होंने पशुधन विकास हेतु सरकारी ऋण योजना पर भी चर्चा किया। कार्यशाला समन्वयक एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर ने कार्यशाला के मुख्य उद्देश्य पर चर्चा करते हुए साइलेज विधि द्वारा हरे चारे के संरक्षण से अवगत कराया। उन्होंने बताया कि पशुओं के लिए सूखे के मौसम में जब खेतों व प्राकृतिक चारागाहों में हरा चारा उपलब्ध नही होता है तो उस स्थिति में यह साइलेज महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसी क्रम में केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक आलोक यादव ने बताया कि साइलेज के अंतर्गत हरे चारे में पाए जाने वाले सभी पौष्टिक तत्व पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध रहते हैं, जो कि गाय, भैंस, बकरी तथा अन्य पशुओं हेतु अत्यंत उपयोगी साबित होते हैं। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनुभा श्रीवास्तव द्वारा साइलेज की सुरक्षा और भण्डारण के अंतर्गत साफ-सफाई, स्वच्छ चारा, उचित भण्डारण स्थल तथा ख़राब हिस्सों को हटाना आदि सम्बन्धित विषयों से अवगत कराया गया। कार्यशाला में उपस्थित बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. आलोक कुमार सिंह ने बताया कि साइलेज में आमतौर पर हरे घास, मक्का, सोरघम तथा अन्य फसलों से बनाया जा सकता है साथ ही बिपिन कुमार सिंह ने साइलेज पर प्रकाश डालते हुए बताया कि इसमें सूखे चारे कि अपेक्षा प्रोटीन, कैल्शियम, फास्फोरस, पोटैशियम व फाइबर आदि जैसे पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में उपलब्ध रहते हैं। केन्द्र के तकनीकी अधिकारी रतन गुप्ता के कुशल नेतृत्व में परियोजना कर्मियों यथा सत्यव्रत सिंह एवं स्वाति प्रिया द्वारा उपस्थित किसानों के समक्ष वृक्ष की पत्तियों आदि से हरा चारा तैयार करना तथा उनके भण्डारण हेतु विभिन्न तरीकों का प्रदर्शन किया गया। आयोजित प्रशिक्षण सह कार्यशाला में 100 से अधिक किसानों ने प्रतिभागिता करते हुए हरे चारे के अधिक से अधिक उत्पादन तथा इसके उपयोग पर विस्तृत जानकारी प्राप्त किया।

Good opportunity for farmers: Green fodder obtained from trees

Staff Reporter

Prayagraj: A one-day training cum workshop was organized on 19.03.2025 under the All India Coordinated Research Project-Fodder run by Ecological Restoration Center, Prayagraj. The workshop was inaugurated by the chief guest Dr. Devendra Swaroop, retired senior scientist, Krishi Vigyan Kendra, Mainpuri. He made the farmers present aware of the silage method and presented a detailed lecture on the conservation of green fodder through it as well as the benefits of feeding this fodder. In the same sequence, he also discussed the government loan scheme for livestock development. Workshop coordinator and senior scientist Dr. Anita Tomar discussed the main objective of the workshop and made them aware of the conservation of green fodder through silage method. He told that in the dry season when green fodder is not available in the fields and natural pastures for the animals, then this silage plays an important role in that situation. In the same sequence, the senior scientist of the center, Alok Yadav, told that all the nutrients found in green fodder are available in sufficient quantity under silage, which proves to be very useful for cows, buffaloes, goats and other animals. Senior scientist Dr. Anubha Srivastava informed about the topics related to cleanliness, clean fodder, proper storage place and removal of damaged parts under the safety and storage of silage. Assistant Professor of Banaras Hindu University, Dr. Alok Kumar Singh, present in the workshop, told that silage can usually be made from green grass, maize, sorghum and other crops. Bipin Kumar Singh, while throwing light on silage, told that nutrients like protein, calcium, phosphorus, potassium and fiber etc. are available in abundance in it as compared to dry fodder. Under the able leadership of the technical officer of the center, Ratan Gupta, project workers such as Satyavrat Singh and Swati Priya demonstrated in front of the farmers present various methods of preparing green fodder from tree leaves etc. and their storage. More than 100 farmers participated in the organized training cum workshop and received detailed information on maximum production of green fodder and its utilization.

Good opportunity for farmers: Green fodder obtained from trees

Prayagraj: A one-day training cum workshop was organized on 19.03.2025 under the All India Coordinated Research Project-Fodder run by Ecological Restoration Center, Prayagraj. The workshop was inaugurated by the chief guest Dr. Devendra Swaroop, retired senior scientist, Krishi Vigyan Kendra, Mainpuri. He made the farmers present aware of the silage method and presented a detailed lecture on the conservation of green fodder through it as well as the benefits of feeding this fodder. In the same sequence, he also discussed the government loan scheme for livestock development. Workshop coordinator and senior scientist Dr. Anita Tomar discussed the main objective of the workshop and made them aware of the conservation of green fodder through silage method. He told that in the dry season when green fodder is not available in the fields and natural pastures for the animals, then this silage plays an important role in that situation. In the same sequence, the senior scientist of the center, Alok Yadav, told that all the nutrients found in green fodder are available in sufficient quantity under silage, which proves to be very useful for cows, buffaloes, goats and other animals. Senior scientist Dr. Anubha Srivastava informed about the topics related to cleanliness, clean fodder, proper storage place and removal of damaged parts under the safety and storage of silage. Assistant Professor of Banaras Hindu University, Dr. Alok Kumar Singh, present in the workshop, told that silage can usually be made from green grass, maize, sorghum and other crops. Bipin Kumar Singh, while throwing light on silage, told that nutrients like protein, calcium, phosphorus, potassium and fiber etc. are available in abundance in it as compared to dry fodder. Under the able leadership of the technical officer of the center, Ratan Gupta, project workers such as Satyavrat Singh and Swati Priya demonstrated in front of the farmers present various methods of preparing green fodder from tree leaves etc. and their storage. More than 100 farmers participated in the organized training cum workshop and received detailed information on maximum production of green fodder and its utilization.

किसानों के लिए सुअवसरःवृक्षों से प्राप्त होगा हरा चारा

संगम शपथ संवाददाता

प्रयागराज। भा.वा.अ.शि.प.-पारिस्थितिक पुर्नस्थापन केन्द्र, प्रयागराज द्वारा संचालित अखिल भारतीय समन्वित अनुसन्धान परियोजना-फॉडर के अंतर्गत एक दिवसीय प्रशिक्षण सह कार्यशाला का आयोजन दिनांक 19.03.2025 को किया गया। कार्यशाला का शुभारम्भ मुख्य अतिथि डॉ. देवेंद्र स्वरुप, सेवानिवृत वरिष्ठ वैज्ञानिक, कृषि विज्ञान केन्द्र, मैनपुरी द्वारा किया गया। उन्होंने उपस्थित किसानों को साइलेज विधि से अवगत कराते हुए इसके माध्यम से हरे चारे के संरक्षण पर विस्तृत व्याख्यान प्रस्तुत किया साथ ही इस चारा को खिलाने से होने वाले लाभ से भी अवगत कराया। इसी क्रम में उन्होंने पशुधन विकास हेतु सरकारी ऋण योजना पर भी चर्चा किया। कार्यशाला समन्वयक एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर ने कार्यशाला के मुख्य उद्देश्य पर चर्चा करते हुए साइलेज विधि द्वारा हरे चारे के संरक्षण से अवगत कराया। उन्होंने बताया कि पशुओं के लिए सूखे के मौसम में जब खेतों व प्राकृतिक चारागाहों में हरा चारा उपलब्ध नही होता है तो उस

स्थिति में यह साइलेज महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसी क्रम में केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक आलोक यादव ने बताया कि साइलेज के अंतर्गत हरे चारे में पाए जाने वाले सभी पौष्टिक तत्व पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध रहते हैं, जो कि गाय, भैंस, बकरी तथा अन्य पशुओं हेतु अत्यंत उपयोगी साबित होते हैं। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनुभा श्रीवास्तव द्वारा साइलेज की सुरक्षा और भण्डारण के अंतर्गत साफ-सफाई, स्वच्छ चारा, उचित भण्डारण स्थल तथा ख़राब हिस्सों को हटाना आदि सम्बन्धित विषयों से अवगत कराया गया। कार्यशाला में उपस्थित बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. आलोक कुमार सिंह ने बताया कि साइलेज में आमतौर पर हरे घास, मक्का, सोरघम तथा अन्य फसलों से बनाया जा सकता है साथ ही बिपिन कुमार सिंह ने साइलेज पर प्रकाश डालते हुए बताया कि इसमें सूखे चारे कि अपेक्षा प्रोटीन, कैल्शियम, फास्फोरस, पोटैशियम व फाइबर आदि जैसे पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में उपलब्ध रहते है। केन्द्र के तकनीकी अधिकारी रतन गुप्ता के कुशल नेतृत्व में परियोजना कर्मियों यथा सत्यव्रत सिंह एवं स्वाति प्रिया द्वारा उपस्थित किसानों के समक्ष वृक्ष की पत्तियों आदि से हरा चारा तैयार करना तथा उनके भण्डारण हेतु विभिन्न-तरीकों का प्रदर्शन किया गया। आयोजित प्रशिक्षण सह कार्यशाला में 100 से अधिक किसानों ने प्रतिभागिता करते हुए हरे चारे के अधिक से अधिक उत्पादन तथा इसके उपयोग पर विस्तृत जानकारी प्राप्त किया।

किसानों को वृक्षों से प्राप्त होगा हरा चारा

पारिस्थितिक पुर्नस्थापन केन्द्र द्वारा एक दिवसीय प्रशिक्षण सह कार्यशाला का आयोजन

PIC: DAINIK JAGRAN-I NEXT

prayagraj@inext.co.in

PRAYAGRAJ (19 March): पारिस्थितिक पुर्नस्थापन केन्द्र द्वारा संचालित अखिल भारतीय समन्वित अनुसन्धान परियोजना-फॉडर के अंतर्गत एक दिवसीय प्रशिक्षण सह कार्यशाला का आयोजन बुधवार को किया गया. कार्यशाला का शुभारम्भ मुख्य अतिथि डॉ. देवेंद्र स्वरुप, सेवानिवृत वरिष्ठ वैज्ञानिक, कृषि विज्ञान केन्द्र, मैनपुरी द्वारा किया गया. उन्होंने उपस्थित किसानों को साइलेज विधि से अवगत कराते हुए इसके माध्यम से हरे चारे के संरक्षण पर विस्तृत व्याख्यान प्रस्तुत किया साथ ही इस चारा को खिलाने से होने वाले लाभ से भी अवगत कराया. उन्होंने पशुधन विकास हेतु सरकारी ऋण योजना पर भी चर्चा किया.

बतायी साइलेज की भूमिका

वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर ने कार्यशाला के मुख्य उद्देश्य पर चर्चा करते हुए साइलेज विधि द्वारा हरे चारे के संरक्षण से अवगत कराया. उन्होंने बताया कि पशुओं के लिए सूखे के मौसम में जब खेतों व प्राकृतिक चारागाहों में हरा चारा उपलब्ध नही होता है तो उस स्थिति में यह साइलेज महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है. इसी क्रम में केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक आलोक यादव ने बताया कि साइलेज के अंतर्गत हरे चारे में पाए जाने वाले सभी पौष्टिक तत्व पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध रहते हैं, जो कि गाय, भैंस, बकरी तथा अन्य पशुओं हेतु अत्यंत उपयोगी साबित होते हैं. वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनुभा श्रीवास्तव द्वारा साइलेज की सुरक्षा और भण्डारण के अंतर्गत साफ-सफाई, स्वच्छ चारा, उचित भण्डारण स्थल तथा खराब हिस्सों को हटाना आदि सम्बन्धित विषयों से अवगत कराया गया.